भारतीय स्वास्थ्य कार्यक्रम में एड्स

डॉ. नरेश पुरोहित

इसका मूल्यांकन किए बगैर कि एड्स नियंत्रण व बचाव कार्यक्रम ने पिछले दशक में कैसा काम किया है भारत इस कार्यक्रम के दूसरे चरण में छलांग लगाने जा रहा है और पुन: पिछली गलतियों को दोहराने पर उतारू है। विडम्बना है कि एच.आई.वी./एड्स बाबत बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों के बावजूद इस रोग को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। वह भी अन्य तमाम ज़्यादा मारक बीमारियों को नज़रअंदाज़ करने की कीमत पर। गौरतलब है कि इस रोग को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की गर्ज़ ने भारत की स्वास्थ्य नीति तक को तोड़-मरोड़ दिया है।

एड्स अपनी तरह का एकमात्र ऐसा रोग है जो विभिन्न प्रकार के अवसरवादी संक्रमणों से जुड़ा है। ये रोग एड्स की उत्पत्ति से ही जन्मते हैं। यह बीमारी हमें हमारी स्वास्थ्य प्रणाली में व हमारे सामाजिक व आर्थिक विकास के पैटर्न में आ रही खामियों से रूबरू होने का मौका देती है। एक संकीर्ण एड्स नीति पर धन बहाकर भारत एक बार फिर गलत जगह दांव लगाने के लिए कमर कसे हुए है। पिछले दशक का अनुभव बताता है कि जब सामान्य प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा लड़खड़ा रही हो तो एड्स कार्यक्रम अकेला नहीं चलता रह सकता।

कार्यक्रम के पहले चरण (1992-1999) में एड्स कार्यक्रम को 320 करोड़ रुपए प्राप्त हुए; दूसरे चरण में विश्व बैंक द्वारा 800 करोड़ रुपए की अभूतपूर्व राशि ऋण स्वरूप दी जानी तय हुई है। पिछले दशक से भारत के जन स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा लगातार तीन सवाल उठाए जा रहे हैं। दाता संस्थाओं व भारत सरकार ने एड्स संक्रमण के परिप्रेक्ष्य में जो पूर्वानुमान व आकलन किए हैं वे कहते हैं कि आने वाले समय में यह रोग सम्पूर्ण भारत को अपनी गिरफ्त में ले लेगा। लेकिन इन दावों को पुष्ट करते आंकड़े नदारद हैं। दूसरा, एड्स का रोग टी.बी., पेचिश, कुपोषण, मलेरिया जैसी विभिन्न बीमारियों से जुड़ा है। अक्सर देखा गया है कि इन रोगों की मौजूदगी प्रतिरोधक प्रणाली को कमजोर कर देती है जिससे शरीर में एच.आई.वी. वायरस के प्रवेश और एड्स की स्थिति तक पहुंचने के बीच का समय कमतर होता जाता है।

एड्स का रोग टी.बी., पेचिश, कुपोषण, मलेरिया जैसी विभिन्न बीमारियों से जुड़ा है। अक्सर देखा गया है कि इन रोगों की मौजूदगी प्रतिरोधक प्रणाली को कमज़ोर कर देती है जिससे शरीर में एच.आई.वी. वायरस के प्रवेश और एड्स की स्थिति तक पहुंचने के बीच का समय कमतर होता जाता है। ऐसे में ज़रूरत है एड्स कार्यक्रम को एक सशक्त प्राथमिक स्वास्थ्य कार्यक्रम से जोड़ने की। न कि प्राथमिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की कीमत पर एड्स निवारण कार्यक्रम चलाने की।

ऐसे में सवाल उठता है कि फिर क्यों अन्य तमाम रोगों के कार्यक्रमों को एक तरफ कर, एड्स हेतु प्राप्त धनराशि का एक बड़ा हिस्सा एक ऐसे लक्षित कार्यक्रम में उड़ेला जा रहा है जिसका प्रयोजन मात्र कंडोम को बढ़ावा देना व यौन शिक्षा है?

तीसरे, समाज में एड्स के बारे में जागरूकता फैलाने वाले तमाम तरीके हौवा फैलाने वाले ज़्यादा होते हैं। पिछले कुछ समय से कई समाजों द्वारा एड्स रोगियों का बहिष्कार करने या उन्हें मार डालने की वारदातों की रिपोर्ट पूरे देश से प्राप्त हुई है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन ने चार राज्यों से इकट्ठे किए आंकड़ों से 5204 एड्स रोगी रिकॉर्ड किए हैं। जबकि एच.आई.वी. की मौजूदगी वाले रोगियों की संख्या 75,000 बताई गई है। (दरअसल शरीर में एच.आई.वी. के प्रवेश के साथ ही एड्स नहीं होता, हो सकता है कि कई सालों बाद वह अपना प्रभाव दिखाए)। सन् 1997 तक ये नमूने 55 प्रहरी निगरानी केन्द्रों